पर ध्यान देती है उतना ध्यान यदि अंबिकापुर और जशपुर के विकास के लिए देती तो शायद इलाके की तस्वीर कुछ और ही होती.

दोनों जिलों में राजपरिवारों के दबदबे का असर भी दिखता है. स्थानीय लोगों का आरोप है कि राजपरिवारों में से एक दिलीपसिंह जूदेव ने हिंदुओं की घर वापसी के लिए आदिवासियों के चरण धोकर उन्हें सम्मानित करने का अभियान तो बड़े जोर-शोर से चलाया लेकिन गायब हो रही लड़कियों की वापसी के लिए कभी कोई मुहिम नहीं छेड़ी. लोगों स्थानीय जनप्रतिनिधियों पर मूलभूत समस्याओं से कन्नी काटने का आरोप लगाते हुए कहते हैं कि सरकारी योजनाओं का लाभ असली हकदारों को नहीं मिल रहा है.

इन आरोपों की सच्चाई हमें झारखंड की सीमा से सटे एक गांव नवाडीह पियारटोली में देखने को मिली जहां रहने वाला केखना अपनी बाड़ी में ककड़ी तोड़ रहा था जबकि उसकी पत्नी जगेश्वरी एक सिलबट्टे में मोटा नमक पीस रही थी. बातचीत के दौरान पता चला कि छत्तीसगढ़ सरकार जिस आयोडीनयुक्त अमृत नमक को 25 पैसे में गांव के हर घर में वितरित करने का दावा करती है, उस नमक के बारे में गांव के लोग जानते ही नहीं हैं. जाहिर-सी बात है जब नमक गांव पहुंचेगा तभी झोपड़ियों में खदबदाने वाली दाल और सब्जियों में उसका उपयोग होगा. गांव के लोग अब भी उस मोटे दाने वाले नमक को खा रहे हैं जिसका इस्तेमाल दूसरी जगहों पर यदा-कदा जानवरों के चारे और कहीं-कही उर्वरक के रूप में किया जाता है.

आठ बच्चों के पिता केखना ने बताया कि सिलवंती नाम की एक युवती जब उसकी बच्ची किरण को लेने आई थी तब गांव में कोई ऐसा सरकारी काम नहीं चल रहा था कि उसे दो पैसे नसीब हो पाते. उसके हाथ पूरी तरह खाली थे. उसे लगा कि यदि किरण शहर जाकर कुछ कमा लेगी तो परिवार की गरीबी दूर हो जाएगी, लेकिन क्या पता था कि किरण फिर लौटकर नहीं आएगी. कुछ इसी तरह का हादसा ग्राम बतौली की एक महिला विश्वास के साथ भी हुआ था. ग्राम कछारडीह में रहने

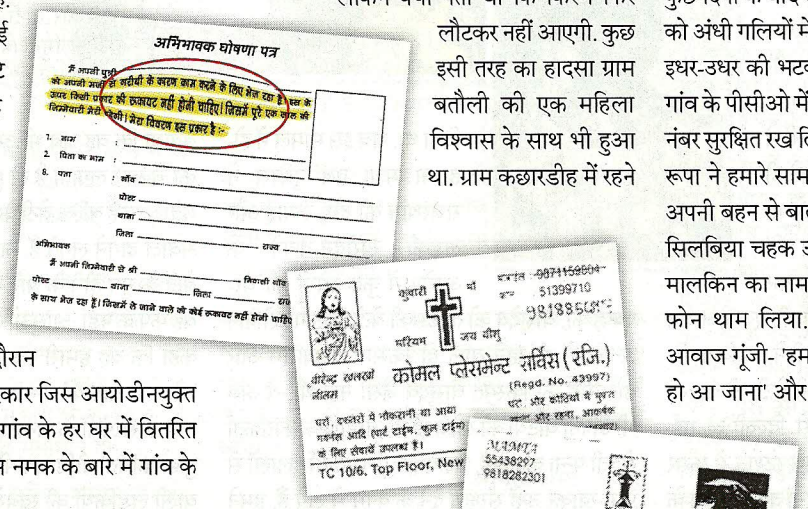

देखने के बाद फौरी तौर पर नहीं लगता कि प्लेसमेंट एजेंसियां कुछ गलत करती होंगी, लेकिन हकीकत इससे अलहदा है. एंजेंसियां अपने बचाव के लिए अभिभावकों से घोषणा पत्र भी लेती हैं. ऐसे एक घोषणा पत्र में लिखा था- 'मैं अपनी मर्जी से गरीबी के कारण अपनी लड़की को काम करने के लिए भेज रहा हूं. इसमें किसी प्रकार की रुकावट नहीं होनी चाहिए.'

ज्यादातर एजेंसियां दिल्ली में हैं. शकूरपुर स्थित एसएसवी इंटरप्राइजेस ने लड़कियों के लिए काफी कठोर नियम बना रखे हैं. एक नियम यह भी है कि ऑफिस के लोगों को छोड़कर कोई भी बाहरवाला लड़कियों से फोन पर बात नहीं करेगा. हमने कुछ विजिटिंग कार्डों में मौजूद नंबरों पर फोन लगाकर घर के काम-काज के लिए लड़कों और लड़कियों की मांग की. फोन अटैंड करने वाले ज्यादातर लोगों ने यह जानना चाहा कि हमें उनका फोन नंबर कहां से मिला. मोतीनगर में कार्यरत बड़ा आदिवासी सेवा सेंटर के फोन नंबर 9899823834 पर एक महिला ने पहले तो काम धंधा बंद चलने की बात कही लेकिन इधर-उधर की बात करने पर उसने आश्वस्त किया कि वह एक लड़की का जुगाड़ कर सकती है. पंजाबी बाग के समीप स्थित दुर्गा प्लेसमेंट सर्विस के फोन नंबर 9811407843 पर भी एक व्यक्ति ने फोन नंबर कैसे मिला, यह जानना चाहा. इधर-उधर की चकल्लस के बाद उसने रामप्रसाद नाम के एक व्यक्ति से फोन नंबर 9210325625 पर बातचीत करने के लिए कहा और भरोसा दिलाया कि जो नंबर वह दे रहा है उसमें सब तरह की डिमांड पूरी हो जाएगी. कोमल प्लेसमेंट सर्विस के फोन नंबर 9818850 87 पर यह जानकारी दी गई कि अभी तो लड़कियां नहीं हैं, जब कहीं से आ जाएंगी तो आपको सूचना मिल जाएगी.

मानव तस्करी के इस फलते-फूलते अवैध कारोबार के पीछे इन इलाकों में फैली घनघोर गरीबी भी जिम्मेदार है

वाला राजेश मिंज नाम का एक व्यक्ति अक्सर उसकी पुत्री सिलबिया से मिलने आया करता था. थोड़े दिनों की मेल-मुलाकात के बाद राजेश ने पूरे परिवार को अपने भरोसे में ले लिया और घर के हालात जल्द ही ठीक होने का झांसा देकर सिलबिया को दिल्ली ले गया. कुछ दिनों के बाद राजेश की मौत हो गई तो सिलबिया को अंधी गलियों में भटकने के लिए मजबूर होना पड़ा. इधर-उधर की भटकन के बाद सिलबिया ने एक रोज गांव के पीसीओ में फोन किया. पीसीओ वाले ने फोन नंबर सुरक्षित रख लिया था. विश्वास की एक और बेटी रूपा ने हमारे सामने फोन नंबर 011-28741433 पर अपनी बहन से बात की. रूपा की आवाज को सुनकर सिलबिया चहक उठी लेकिन जैसे ही रूपा ने उसकी मालकिन का नाम जानना चाहा तो किसी महिला ने फोन थाम लिया. फोन पर एक महिला की भारी आवाज गूंजी- 'हम रजिंदर नगर में रहते हैं. जब आना हो आ जाना' और फिर फोन काट दिया गया.

मोर नातिन के खोइज के लाइन दीहो

जशपुर जिले के एक गांव लोखंड़ी में सातवीं में पढ़ने वाली सावित्री अपने पिता सहनंद के देहांत के बाद अपनी नानी फगनी बाई के साथ ही रहा करती थी. सावित्री के स्कूल और फगनी की झोपड़ी में बमुश्किल दस कदम का फासला है. एक रोज जब वह स्कूल से घर नहीं लौटी तो फगनी बेचैन हो उठी. इधर-उधर के घरों में खोज-खबर लेने के बाद पता चला कि मीराबाई नाम की एक महिला उसे अपने साथ ले गई है. सावित्री के जाने के बाद फगनी का खाना-पीना छूट गया और उसने बिस्तर पकड़ लिया. अब हर शाम जब गांव धुंधलके की गिरफ्त में आता है तब एक बूढ़ी औरत का रूदन जंगल और पहाड़ों का सीना चीरने लगता है- मोर जियत-जियत खोइज के लाइन दीहो... उके देखखं मोए तरसथ हौ... उके नी लानहौ तो मैं मइर जाऊं..... (मेरे जीते-जीते उसे खोजकर ला दो. उसे देखने के लिए मैं तरस रही हूं. यदि उसे नहीं लाओगे तो मैं मर जाऊंगी.)

फगनी की तरह ही भेलवाडीह ग्राम के दो